
लावा
दीपक डोगरा



कलासन प्रकाशन

[illegible]

[illegible]

द्वारा प्रकाशित

लावा

लेखक
दीपक डोगरा

कलासन प्रकाशन, बीकानेर

ISBN 81- 86842 10-1

सस्करण प्रथम 1996

प्रकाशक कलासन प्रकाशन
मॉडर्न मार्केट बीकानेर
दूरभाष 521439

आवरण सार

मूल्य 80 रुपये मात्र

मुद्रक कल्याणी प्रिण्टर्स
माल गोदाम रोड बीकानेर
दूरभाष 526890

LAWA (Gazal Collection)
by Deepak Dogra

Rs 80/-
Pages 88

समर्पित है
हर उस हिन्दोस्तानी
को
जिसका
ज़मीर अभी ज़िन्दा है

प्रस्तावना

पायलट अफसर दीपक डोगरा की उज्ज्वल छवि, एक नवोदित कवि के रूप मे ही नहीं वरन भारतीय वायुसेना के एक उदीयमान और होनहार, युवा साहित्यिक के रूप मे उभर कर सामने आ रही है। उनके प्रथम कविता सग्रह "हिरखै दी मौत ' (1988) ने काव्य जगत मे तहलका भले ही न मचाया हो, परन्तु इसमे कोई सन्देह नहीं कि उस रचना के माध्यम से दीपक डोगरा ने काव्य-डगर पर एक दृढ एव अर्थपूर्ण कदम रखा और डोगरी भाषा को एक सुन्दर तथा भव्य आभूषण से अलकृत किया। देश के एक सजग एव सशस्त्र प्रहरी की साहित्यसृजन मे यह आस्था तथा नैपुण्य सामरिक तथा सास्कृतिक धाराओ का एक अनोखा एव प्रशसनीय सगम है।

'लावा दीपक डोगरा की दूसरी महत्वपूर्ण काव्याजलि है। हिन्दी-उर्दू मिश्रित इस रोचक सकलन मे कवि की भावुकता सवेदना वैचारिक नज़ाकत तथा सासारिक घटनाक्रम को गौर से देखने की एक अनूठी, पैनी तथा भेदक नज़र साफ-साफ उभर कर आती है जिसने 'जहॉ न पहुचे रवि वहॉ पहुचे कवि' उक्ति को सार्थकता प्रदान की है। जीवन के कई पहलू ऐसे होते है जिन्हे जनसामान्य नित्यप्रात देखते सुनते और टटोलते तो अवश्य है मगर पहचान नहीं पाते। कुछ असमर्थता कुछ अनिच्छा, कुछ समय तथा लगन का अभाव, इत्यादि इसके आशिक कारण हैं मगर मुख्य कारण है उस एक खास प्रतिभा का न होना जो कवियो तथा दार्शनिको मे पाई जाती है। आदि कवि वाल्मीकि के आदि श्लोक "मा निषाद प्रतिष्ठा त्वमगम ' के उद्भव का कारण कुछ ऐसा ही था।

एक कुशल एव सक्षम कवि ऐसे समस्त पहलुओ को पहचानता है उस पहचान की गहराई तक जाकर उनका जायज़ा लेता है और तत्पश्चात कविता, अशआर आदि के माध्यम से हम सबको उस अन्तर्भूत आनन्द अथवा पीड़ा से अवगत कराने की चेष्टा करता है जिससे, हम या तो अनभिज्ञ होते हैं या परिचित होते हे तो मात्र एक सतही तौर पर।

'लावा' ऐसी ही प्रेरणा तथा प्रतिभा से स्फूर्त एक गतिशील एव स्निग्ध वाग्धारा है। इसके प्रवाह मे डुबकी लगाकर जनता जनार्दन पुलकित हो इसका आनन्द लें, इस नवोदित युवा कवि को शुभाशीष दें तथा उसका हौसला बढायें यह मेरी प्रार्थना एव शुभकामना है। दीपक डोगरा की इस नवीनतम रचना से तथा उनकी आगामी रचनाओ से हिन्दी साहित्य उत्तरोत्तर समृद्ध होगा और सजे सवरेगा यह मेरा विश्वास है।

सतीश गोविन्द इनामदार
एयर वाइस मार्शल
वायुसेना मुख्यालय नई दिल्ली।

नई दिल्ली
10 जनवरी 96

अपनी ओर से

भौतिकता की लहलहाती फसल के नीचे नैतिकता की घास दम तोड़ रही है। जीवन के यथार्थ धरातल की कठोरता एवं निर्ममता से दो चार होते हुए, मेरे मन के ज्वालामुखी में कई सालों से उथल पुथल चल रही थी। वही आज लावा बनकर फूट पड़ी है। मेरी दिली हसरत है कि इस दिल से उठने वाला लावा हिन्दोस्तान के करोड़ों दिलों तक पहुँचे। लावा एक मुहिम है, एक ज़रिया है भारत के नौजवानों के दिल की तह तक पहुँचने का, ज्यादा कुछ नहीं कहूँगा क्योंकि लावा का एक एक लफ़्ज़ मेरे दर्द आशना दिल की गहराइयों से निकला है। पाठकों की राय और मज़म्मत का इन्तज़ार रहेगा।

15 अगस्त, 1996 — दीपक डोगरा

तरतीब

नज़्में

आज हम आजाद है।

आज हम आज़ाद है आज हम आज़ाद है
सुरखरू है शाद है आज हम आज़ाद है

आज अपने घर मे हम बेफ़िक्र सो सकते नहीं
यार के कॉधे पे रख के सरको रो सकते नहीं
दूसरो का बॉटना दुख आज हमको है मना
वक्त पड़ने पर निगाहे फेर लेते आशना
अपने भाई का लहू पीने को हम आज़ाद है

असमते बहनो की सुबहो शाम नोची जा रहीं
बेटियॉ क्यो आग मे ज़िदा है झोकी जा रहीं
नौजवॉ जिन को कहा है देश की तलवार है
अब वही करने को टुकड़े देश के तैयार हे
खेतियॉ बारुद की करने को हम आजाद है

आस्मॉ पर सोचते होगे शहीदाने वतन
हाए किस के हाथ आए सौप कर अपना चमन
कितने गोली से मरे और कितने सूली चढ गए
वो निहत्थे हो के तलवारो पे भारी पड़ गए
भूलने को उनकी कुर्बानी को हम आज़ाद है

हर नज़र मे खौफ है हर इक ज़ुबॉ चुपचाप है
अब तो सचाई से जीना जैसे कोई पाप है
मज़हबो की आड़ मे है मौत बेची जा रही
क्यो दिलो के बीच मे रेखा है खैची जा रही

मॉ के सर से पल्लू सरकाने को हम आज़ाद है
आज हक मिलता नही उसको जो दावेदार है
हो रही नीलाम सच्चाई सरे बाज़ार है
छोड़ कर भगवान को शैतान पूजे जा रहे
भेड़ की खाले पहन कर भेड़िए इतरा रहे
लूटने को देश की दौलत को हम आज़ाद है

अपनी मॉ बहनो तलक को बेचकर हम खा गए
हमको जाना था कहॉ और हम कहॉ पर आ गए
किस लिए जाने है सबका खून पानी हो गया
सरफरोशी का वो जज्बा है कहॉ पर खो गया
झूठ को सच से बड़ा कहने को हम आज़ाद है

है समय अब भी अगर हम होश मे आ जाऐंगे
देश के दुश्मन तमाम हमसे मुॅह की खाएगे
आओ मिलकर अपनी मॉ के दूध की खाए कसम
तरी हस्ती मिटने न देगे मेरे प्यारे वतन
आज भी भारत पे मर मिटने को हम आज़ाद है



मेरे शहर मे

वड़े अजीव हे हालात आज मेरे शहर मे
कैसे थम गए लम्हात आज मेरे शहर मे

न जाने किस लिए हर-सू अजीव सी चुप है
कोई करता नहीं है वात आज मेरे शहर मे

गली कूचो मे रगो-वू की जगह रजो गम की
कैसी होने लगी वरसात आज मेरे शहर मे

कोई हॅगामा वर्पाएगी खुदा ख़ैर करे
है करवट ले रही हयात आज मेरे शहर मे

कौन अपना है गैरो मे, गैर अपनो मे
कसौटी पे है ये जज्वात आज मेरे शहर मे

नौजवानो का लहू वह रहा पानी की तरह
वट रही मौत की सौगात आज मेरे शहर मे

सुवह के घास पे शवनम के मोतियो की जगह
पड़े हे खून के कतरात आज मेरे शहर मे

कैसा दिल शिकन माहौल पुरअसरार फ़िज़ॉ है
कौन लाया ये काली रात आज मेरे शहर मे

एक दुल्हन की लाश लेके चल पड़ी डोली
जनाज़ा ले चली बारात आज मेरे शहर मे

चिता मे जल गए अरमॉ नई नवेली दुल्हन के
दे कर इन्सानियत को मात आज मेरे शहर मे

हिन्द की बेटी ने इन्सानियत को भेट किए
लाल चूड़ो से भरे हाथ आज मेरे शहर मे

हिन्दू मुस्लिम ईसाई सिख क्यो सभी चुप है
कौन पाएगा ये सौगात आज मेरे शहर मे

खुदाया भेज फिर रहमत का फरिश्ता कोई
जो लाए सुख की अलामात आज मेरे शहर मे



टीपू का मकबरा

सुना था कि दकन मे इक हैदर अली हुआ
दाना सिपहसिलार वो जॉवाज़ मर्द था

इन्सान था जिगर से वो था दिल से मुस्लमॉ
फ़िक्रे-वली-एहद से वो रहता था परेशॉ

जब लाखो चौखटो पे सर उसने झुका लिया
तब टीपू औलिया ने था बेटा अता किया

बेटा भी क्या वो वक़्त की तक्दीर बन गया
थोड़ा बड़ा हुआ तो वो शमशीर बन गया

जाहो जलाल उसका था बढ़ता चला गया
नींदे फिरगियो की उड़ाता चला गया

वो शेर का बेटा था के शेरो से सिवा था
दुशमन जो आया सामने बचकर न जा सका

मॉगी न उसने हार फिरगी के वार से
फ्रॉसीसियो को साथ मिलाया था प्यार से

कितने नए हथियार थे खुद उसने बनाए
लोहे के चने उसने फिरगी को चबाए

मैसूर के ज़र्रों को नया जोश दिया वो
दुशमन के अज़ायम को बड़ा पस्त किया वो

टीपू ने था दुशमन को कई बार खदेड़ा
आज़ादी का इक राग नया उसने था छेड़ा

हुस्न-ए-वतन को उसने चार चाँद लगाए
मस्जिद कहीं मदिर कही पे महल बनाए

अब भी दरो दीवार उन महलो की गवा है
टीपू की याद हरजा फैली बन के सबा है

मैदाने जग मे जो शहादत को पा गया
कहते है मौत को वही रुसवा बना गया

लड़ते हुए उस शेर ने जॉ तक निसार की
गर्दन कटाई काट कर गर्दन हज़ार की

आगोशे अजल मे वो बब्बर शेर सो गया
नाम उसका दरख्शॉ जमाने भर मे हो गया

सोया है वो जरनैले अव्वल कितनी शान से
दिल को यकीं नहीं वो उठ चुका जहान से

टीपू का मकबरा है हिम्मत का मकबरा
जुर्रत का मकबरा है शहादत का मकबरा

हिन्दी फिरगियो की अदावत का मकबरा
जिससे डरे अग्रेज़ उस ताकत का मकबरा



अमन का जाम

जिदगी मे हर कदम तू गुनगुनाए जा
मुस्कुरा के मिल सभी से गम छुपाए जा।

गैर को अपना समझ अपनो को खातिर जाँ लुटा
तल्खियाँ अपनी छुपा के दूसरो के काम आ

पी के गम औरो को अपनी हर खुशी तक्सीम कर
जग मे आया है तो बन्दे नेक बन नेकी कमा
जल न जाए हिन्द का हर शहर हर गाँव कहीं
आग तू फ़िरका परस्ती की बुझाए जा।

जग मे वफा फरोश मिलेगे तो वफ़ादार भी
बुज़दिलो की बस्ती मे रहते कई दिलदार भी
है जबाँ कड़वी कही ये और कहीं मीठी बहुत
दिल मे उल्फत रखते है म्यान मे तल्वार भी
हिन्द की तक्दीर लिख अपनी कलम की नोक से
सच ही रब है सबको तू इतना बताए जा।

अपनी सारी जिदगी करता किसी के नाम है
औरो का गम बाँटना इन्साँ का पहला काम है
बेच कर खुशियाँ जो दुनियाँ भर के गम खरीद ले
वो पिलाता सारी दुनियाँ को अमन का जाम है
जग मे गर कोई कमी है तो कमी है अमन की
हो सके तो जाम ये सबको पिलाए जा।

❑

सच्चा प्यार

तेरी शोखियाँ, तेरे अन्दाज,
लफ्ज़ो मे क्यों नहीं होते।
इसी सबब से नया गीत,
वर्ना लिख देता।

तेरे दिल पे,
मेरी बातो का असर चाहे न हो,
तेरे चुप रहने का अन्दाज़ जान लेवा है।

प्यार सच्चाई से करना
उतना आसाँ तो नही,
पर मुझे नाज़ है इसपे
के मै इक सच्चा आशिक हूँ।

इक बात मै पहले
तुझे बताना चाहूँगा,
तू ये मत सोचना
के प्यार मै
तुम से ही करता हूँ।

तुझसे पहले भी मैं
किसी से प्यार करता था,
जिसे अब भी मै करता हूँ
हमेशा करता रहूँगा

मुसीबत उस पे पड़ेगी
तो जॉ तक मै लुटा दूँगा,
समय कुर्बानी का आया
तो मर के मे दिखा दूँगा।

उसी पे जान दे दूँगा,
न कोई शिकवा करूँगा,
आखरी सॉस पे दिल से
उसी को सजदा करूँगा।

मेरे सीने पे लिखा है
उसी का नाम दिलरुबा,
वो मेरी जान है वो ही
मेरा इमान दिलरुबा।

इतना सुनने के वाद
तेरा दिल उससे जलता होगा,
आखिर कौन है दीपक को जो
तुम से भी प्यारी है।

लो तुम भी जान लो
वो कौन मुझे इतनी प्यारी है,
वो कोई ग़ैर नहीं
फकृत भारत मॉ हमारी है।



दुनियाँ आनी जानी है

यस एक चीज़ है प्यार के काबिल
बाकी सब बेमानी है।
रब का नूर अमर है लोगो
दुनियाँ आनी जानी है।

दुनियाँ की रस्मा ने
शैतानो को खुदा कर डाला है
मज़हब की दीवार ने
इन्सानो को जुदा कर डाला है
कितने शैतानो को हमने
पीर समझ कर पाला है
क्यो मंदिर मे पहरा भाई
क्यो मस्जिद पर ताला है
उसका दिया रहेगा बाकी
हर शम्मा बुझ जानी है
रब का नूर अमर है लोगो

सब कहते हैं हर इन्साँ के
अन्दर मालिक का घर है
फिर क्यो इतने इन्सानो के
होते मालिक बेघर हैं
दिल को साफ करो अपने
और दुनियाँ मे किसका डर है
हर इन्साँ खुद अपना मसीहा

और खुद अपना रहबर है
उसका वजूद और रुह तुम्हारी
छोड़ के सब कुछ फानी है
रब का नूर अमर है लोगो

लगता है इन्सॉ अब हर
शै पर काबू पा जाएगा
फिर भी खाली हाथ आया था
और खाली ही जाएगा
मन का घोड़ा बेकाबू है
रब को कैसे पाएगा
वक्त गुजरता जाए बन्दे
होश तुझे कब आएगा
इसको मोड़ सको तो मोड़ो
दिल दरिया तूफ़ानी है

बस इक चीज़ है प्यार के काबिल
बाकी सब बेमानी है
रब का नूर अमर है लोगो
दुनियॉ आनी जानी है।



नया सवेरा

हाए-कैसा ये ज़माना आया!

अब मुहब्बत करो तो रुसवाई
अब मुशक्कत करो तो रुसवाई,
हमने दोनो को करके देख लिया
हमको कोई भी शै न रास आई।

दीन-ओ-ईमाँ को मौत आने लगी
जिन्दा लाशे टहलती चारसू है,
शहर मे हर कहीं हँगामा है
बचे शमशान तक न पुरसकूँ है।

मै जिदगी का ठेकेदार नहीं
वतन से किसको होता प्यार नहीं,
माँ बहन जिसमे बेची जाती हो
ऐसी दुनियाँ से मुझे प्यार नहीं।

इन्साँ हैवान से बदतर क्यो है
सभी के हाथ मे खजर क्यो है,
आग फिरका परस्ती की लगी है
जलता हर गाँव हर इक घर क्यो है।

दिलाई किसलिए आज़ादी हमे
हज़ारो हस्तियो ने जॉ गवाकर,
क्या सिला उनको शहादत का मिला
अपने प्यारे वतन के काम आकर।

जब से देखा ज़मीर बिकता हुआ
हर कोई चोर नजर आता है,
बदल चुकी है निगाहे सबकी
महज़ पैसे से सबका नाता है।

हर एक महकमे के लोग भेड़ियो जैसे
हिन्द का मॉस नोच नोच के खाते है आज,
रोती चिल्लाती भारत मॉ के सर से पल्लू को
सरे बाज़ार कितने बेटे सरकाते है आज।

मगर अब फिर से हिन्द जागा है
पॉव फिर सर पे रख के ज़ुल्म-ओ-सितम दौड़ेगे,
हिन्द के नौजवॉ दुशमन का सर कुचल देगे
सोन चिड़िया को फिर जन्नत बना के छोड़ेगे।

कोई आवाज़ सुन रहा है मेरी
कोई ऐलान सुन रहा है मेरा,
ज़मीं दहशत से सुरखरु होगी
हिन्द मे आएगा नया सवेरा।



हम मतवाले

मंज़िल घूमके लौटेंगे हिम्मत जो अपने साथ है
हम मतवाले दिलवाले हमको खुद पर विश्वास है

हमने मर मिटने के अरमा अपने दिल मे पाले है
लावा बनकर फूटेंगे इस दिल म जितने छाले ह
सागर पीकर बुझ नहीं पाई दिल मे इतनी प्यास है

हम दुश्मन की राख से पेशानी पे तिलक लगाएंगे
हम नागो के बिल म घुसकर उनका ज़हर मिटाएंगे
दीवाली आने को हैं मिट जाने को बनवास है

वक्त बदल कर रख देंगे तक़दीर बदल कर छोड़ेंगे
हम जीवन के दरिया को मंज़िल की जानिब मोड़ेंगे
तलवारो का रुख मोड़ेंगे क़लम जो अपने हाथ है।



नया सूरज

जिस तरह हर शोख़ सुबह से पहले,
स्याह काली रात लाज़मी है।
कोई सुवह क्या रात से पहले आ सकी?
ठीक वैसे ही,
फसल-ए-वसल के आने से कवल,
अफसुर्दगी का होना लाज़मी है।
सगरेज़ा है दिल,
ग़र दर्द से ना-आशना है,
दर्द से आशनाई,
फितरत-ए-इन्सानी है।
दर्द होगा तो राहते होगी,
ख़ाक तब जिसकी चाहते होंगी,
उगेगा वही फ़र्द,
इक नया सूरज वनकर,
दूर जब ग़म की आहटे होगी।



मौजूदा नस्ल

आज भी लोग इस ज़माने मे जीते है मगर,
खुद अपने दिल के ज़ख्म आप ही सीते है मगर।

किसी के वास्ते कोई जॉ लुटा नहीं सकता,
काम औरो के आज कोई आ नही सकता।

हाल गौतम की ज़मी का है ये तो क्या होगा,
यही आलम रहा बर्षा अगर तो क्या होगा।

कौन खतरो से हिन्दोस्तान को बचाएगा,
कोन एहल-ए-वतन की खातिर जॉ लुटाएगा।

अब भी हॅसते हुए सूली पे चढ सकता है कोई
निहत्था होके तलवारो से लड़ सकता है कोई।

अब भी पोरस जैसा कोई यहॉ पर होगा,
देश की खातिर हथेली पे जिसका सर होगा।

सिकन्दर जीत के भी हार गया था जिससे,
थी सीखी वतन परस्ती कहो उसने किससे।

ऐसा लगता है सब का खून बन गया पानी,
तबाह हिन्द को करने की सबने है ठानी।

वजूद रखते है अब लोग जिन्दा लाशो का,
होगा अन्जाम मगर क्या इन तमाशो का।

सारी दुनियाँ की नजर मे गिरेगा देश अपना,
ये रिश्वत खोर तोड़ देगे हिन्द का सपना।

मौजूदा नस्ल गर सब कुछ भुला के सोएगी,
तो आने वाली नस्ल दिल पकड़ के रोएगी।

हो-न-हो हिन्द कल को फिर गुलाम हो जाए,
लहू शहीदो का पल मे नीलाम हो जाए।

बात किस किस की करे हाल सबका खस्ता है,
गुनाह-ओ-जुर्म का पकड़ा सभी ने रस्ता है।

कौन से महकमे की बात करे कैसे कहे,
किस तरह इनसे कहे कि खुदा से डर के रहे।

हराम की कमाई घर मे लेके जाएगे,
अपनी औलाद को मीठा जहर पिलाएगे।

आज जिनके लिए गद्दार हम कहाते है,
दीन-ओ-ईमान को भी दाव पे लगाते है।

वही पूछगे न कल हाल हमारा सुन लो,
बड़े होकर करेगे हम से किनारा सुन लो।

और फिर अपनी करतूतो पे पशेमाँ हो कर,
कहेगे सारे जमाने से कल को हम रो कर।

मेरे हम यतनो बुराई का फल बुराई है,
किसी को भी ये बुराई न रास आई है।
❑

जीवन सार

मै दुखी तुम भी दुखी
दुखियो की ये बस्ती सही।

फिर भी इसमे,
लाखो ऐसे लोग हैं,
जो हर घड़ी
हर एक पल,
अपने सीने मे छुपा के ग़म कई
मुस्कुराहट का मुखोटा पहन कर,

किस तरह,
देखो यो हँसते जा रहे है
दूसरो को भी
हँसाते जा रहे है।

सच यही है दोस्त
जग मे सब दुखी है,
पर कोई दुखिया अगर
दुख मे भी मुस्कुरा गया,
मै तो बस इतना कहूँगा
उसको जीना आ गया।



तल्खियाँ

बुलाओ उनको ज़िदगी से जो बेज़ार नहीं,
पड़ी जहाँ मे जिन्हे तल्खियो की मार नहीं।

मै भी समझा था ज़िदगी गुलाब जैसी है,
आज एहसास हुआ ये तो आग जैसी है,
जिनको एहल-ए-वफ़ा कहके पुकारता था मै
वो बेवफा तो मुहब्बत से ही दो चार नहीं।

उठा के सर जिया मै आज तक ज़माने मे,
अब तो माहिर भी हो गया हूँ ग़म उठाने मे,
मैने हँस के गुज़ार डाला खिलवतो का समाँ
किसी के रहम-ओ-कर्म का मै तलबगार नहीं।

मै वो शायर हूँ जो खुशदिल है ग़मज़दा भी है,
जिसके जीने का सलीका जुदा जुदा भी है,
मैने दुनियाँ की बेदिली से मुहब्बत की है
इसीलिए तो ज़माने से शर्मसार नही।

मैने फूलो को सराहा हुस्न की चाह की है,
जिसने लूटा उसी के घर मे फिर पनाह ली है,
गरक हो कायनात फिर भी जिगर से अपने
मिटाने इश्क-ओ-मुहब्बत को मै तैयार नहीं।

दिल की बातो को बस अल्फाज़ बना देता हूँ,
अपने जज्बे हवाले कलम किए देता हूँ,

मुझको हालात ने वख्शी है फसल-ए-सुखनवरी
मे मीर-ओ-ग़ालिव जैसा उन्दा कलमकार नहीं।

मैं अपनी वेवसी पे अश्क न वहाऊँगा,
वदल के अपने मुकद्दर को मै दिखाऊँगा,
खुली आवाज मे ऐलान किया है मैने
खुद पे करता हूँ मे किस्मत पे ऐतवार नहीं।



तहज़ीब

वतन परस्ती का सबक तो सिखाना होगा
हर एक नोजवॉ को होश मे लाना होगा

न हम इन्सानियत को इस तरह मरने देगे
रकीबो को कभी मनमानी न करने देगे
जमीन-ए-हिन्द ही हम सब की पाकीज़ा मॉ है
इसी की खातिर हमे मर के दिखाना होगा

आज बच्चे भुला के बेठे है तहज़ीबो को
कोई इतना ही बता दे इन बदनसीबो को
यूॅ न दीवानगी मे मगरबी बनते जाओ
वतन की खातिर तुम्हे लौट के आना होगा

आज तहज़ीब-ए-हिन्द को पुराना कहते हो
हर घड़ी कोसते हिन्दोस्तॉ को रहते हो
मेरी इक बात एहल-ए-वतन गौर से सुन लो
आज जो है नया कल वो ही पुराना होगा

सिपाही का लहू सरहद पे न बहे जब तक
हिफाज़त मुल्क की तो हो नही सकती तब तक
वो लड़के लड़कियॉ जो भूल चुके है इसको
आज उनको यही एहसास दिलाना होगा

कोई ताकत न इन कदमो को रोक पाएगी
कूचे कूचे मे मेरी कलम ये चिल्लाएगी
हमे नेताजी और वीर भगत सिह बनकर
अपनी हिम्मत से आस्माँ को हिलाना होगा

सभी को हिन्द ने सिखाया मुहब्बत करना
हाथ मे हाथ लेके दोस्ती का दम भरना
आज फिर फलक पे नफरत की घटा छाई है
अमन का जाम सारे जग को पिलाना होगा

गली गली मे मारधाड़ हो रही है आज
खून के आँसू भारत माँ रो रही है आज
ज़मीन-ए-हिन्द पे फिर से सकूँ लाने के लिए
चन्द लोगो को लहू अपना बहाना होगा

कदम कदम पे हमने धोखा और दगा पाया
मिले जिस से भी उसी शख्स को ठगा पाया
जो तलवारे तनी हैं सर कलम करने को यहाँ
अब उनको लौट के म्यान मे जाना होगा

मौत की नींद हम वतनो को सुला देते हो
वहशी बनके उस ख़ुदा को भुला देते हो
ये कत्ल-ओ-ग़ारत ले जाएगी जहन्नुम मे हमे
मिटाने का इसे अब बीड़ा उठाना होगा

ऊँचा हिमालय से है जनून अपना
जिसमे मिलावट हो नहीं वो ख़ून अपना
हर एक हिन्दी को अब कौमी सिपाही बनकर
वतन के दुशमनो को मार गिराना होगा

चैन की नींद सोने वालो होश सभालो
वतन के वास्ते जियोगे ये कसम खालो
पड़ी इन्सानियत ज़ुल्मो सितम के पैरो मे
उठाकर इसको पेशानी पे सजाना होगा

आज पचास साल हो गए आजादी को
इक नज़र देखलो मुड़कर ज़रा आबादी को
आबादी बढ़ती रही गर इसी रफ्तार के साथ
हर एक हिन्दी को कल मॉग कर खाना होगा

फर्क़ लड़के व लड़की मे नज़र आता ही नही
कोई इस मुददे पे तो गौर फर्माता ही नहीं
यही आलम रहा तो देख लेना कल लोगो
हर एक तीसरा जवान जनाना होगा

हिन्द की बेटियो तुम्हे अपना हक पाने के लिए
अपनी ताकत का लोहा जग से मनवाने के लिए
पौशाक पहन कर मर्दो की कुछ नहीं होगा
उनके सग तुम्हे सरहद पे भी जाना होगा

न कभी भूलना फिरगी थे दुश्मन अपने
आज क्यो सब लगे है माला उन्हीं की जपने
हिन्द की सारी दौलत ले गए जो घर अपने
छीन के उनसे कोह-ए-नूर को लाना होगा

सड़ी गली सी इक तहज़ीब दे गए थे वो
लूट के हर शै हिन्दोस्ताँ की ले गए थे वो
ये हिन्दोस्तान की मिट्टी उगलती सोना है
उन लुटेरो को ये एहसास दिलाना होगा

जिन्होने सोने की चिड़िया के पर उखाड़े थे
फरिश्ते भगत सिह जैसे जिन्होने मारे थे
हिन्द मे मग़रबी तहज़ीब बो गए थे जो
उनके हर ख़्वाब को नाकाम बनाना होगा

बहुत सहा है ज़ुल्म अब नहीं सहेगे हम
उनकी तहज़ीव को अपना नहीं कहेगे हम
जिन्होने दो सदी हमको गुलाम रखा था
उनकी तहजीब को हरगिज न अपनाना होगा

हमे चर्चिल के वो अल्फाज़ अभी नहीं भूले
कि हिन्दोस्तान चाहे कल को आस्माँ छूले
इक सदी के बाद हिन्द का बच्चा बच्चा
जन्म से हिन्दी आदतो से इगलिस्ताना होगा

अभी तो आधी सदी भी न गुज़र पाई है
और अग्रेज़ बनी नस्ल इक चौथाई है
आशियाँ न जल जाए चराग़ से घर के
अब इसको मग़रबी हवा से बचाना होगा

विवेकानन्द भी तो इस ज़मीं का जाया था
जो इक पैगाम ले के इस जमीं पे आया था
कि मग़रब हमको मानेगा हम नहीं उसको
रहके हिन्दी ही क़दम आगे बढाना होगा

खो के तहज़ीव की तरक्की तो कुछ भी न किया
ऐसी बिजली की रौशनी से तो अच्छा था दिया
इमान ज़िदा रखके गर तरक्की करनी है
विवेकानन्द हर बच्चे को बनाना होगा

भुलाके फिरका परस्ती वतन से प्यार करे
आ पड़े वक्त गर तो जान तक निसार करे
सोन चिड़िया के नए पख उगाने के लिए
सभी को एक ही परचम तले आना होगा

जो चाहते है हिन्दोस्तान हो टुकड़े टुकड़े
भरी बहार मे ये चमन ख़िज़ॉ सा उजड़े
अपनी सरहद पे फौलादी दीवारे बनाकर
उनके अरमानो को नाकाम बनाना होगा

है जश्न जिनके वास्ते उजड़ जाना अपना
रोज़ देखे है जो हमारे हश्र का सपना
कोशिश-ए-दुशमना नाकाम बनाने के लिए
बच्चे बच्चे को काम देश के आना होगा

ऑख उठेगी जो इस ओर फोड़ देगे हम
और जो ऊॅगली उठी इस ओर तोड़ देगे हम
असमत-ए-हिन्द अपनी सबसे बड़ी दौलत है
जान दे के भी इस दौलत को बचाना होगा

मगर हम कुछ नहीं अन्जाम दे सकते तब तक
फिर से तहज़ीब-ए-हिन्द को न अपनाए जब तक
अपने दुशमन को नानी याद दिलाने के लिए
हर एक हिन्दी को हिन्दी नजर आना होगा

ईमानदारी बेख़ुदी और सच्चाई
बे- ख़ौफियत, खुददारी और अच्छाई
इसी डगर पे जीने की कसम खाके हमे
जमीन-ए-हिन्द को फिर जन्नत बनाना होगा
□

ममता

आओ मै सुनाऊँ तुम्हे इक माँ की दास्ताँ
हालत पे जिसकी रो पड़े ज़मीन-ओ-आस्माँ

बेवा कहाई खोके जवानी मे सर का ताज
दुनियाँ के भेड़ियो से बचाती रही थी लाज

नन्हा सा उसका लाल जो छाती से लगा था
दुनियाँ मे फक्त वो ही तो उस माँ का सगा था

कर करके मुशक़्क़त वो पालती थी लाल को
लगने न दी थी गर्म हवा नौनिहाल को

जल जल तमाम उम्र वो मर मर के जी गई
उस लाडले के वास्ते आँसू भी पी गई

जिसने जला के राख बनाई थी जवानी
तुमको सुना रहा हूँ मै उस माँ की कहानी

बेटे ने बड़े होके माँ को प्यार दिया था
बरसो से जिसका माँ ने इन्तज़ार किया था

उजड़ा हुआ चमन था फिर आबाद हो गया
दिल माँ का ख़ुशी पाके बड़ा शाद हो गया

अब आ चली थी उसके लाडले पे जवानी
चढती जवानी जैसे हो दरिया की रवानी

इक नाजनीं पे उसका दिल निसार हो गया
कुछ ही दिनो मे उनमे बड़ा प्यार हो गया

गाता था सुवह-ओ-शाम वो उसका ही तराना
वो सामने आती तो भूल जाता ज़माना

इक दिन वो उससे बोला तुम्हे पाके रहूँगा
अपनी शरीक-ए-जिदगी बना के रहूँगा

बोली वो हसीना कहो कर सकते हो तुम क्या
मेरे लिए ज़माने से लड़ सकते हो तुम क्या

बोला वो नौजवॉ जहॉ को आग लगा दूँ
इक तेरे इशारे पर मै मर के दिखा दूँ

थी जानती है नौजवॉ को मॉ से मुहब्बत
देखे तो आज़मा के ज़रा इसकी मुरव्वत

हसरत है तुम्हे मेरी तो घर लौट के जाओ
लाकर कलेजा अपनी मॉ का मुझको दिखाओ

ओ नौजवॉ ये काम तुम जो कर न पाओगे
वादा करो न फिर मुझे सूरत दिखाओगे

उसने तमाम रात थी ऑखो मे गुज़ारी
फिर इश्क के अन्धे ने ले ली एक कटारी

सोती हुई माँ पर कटार उसने चलाई
घबरा के वो देने लगी बेटे की दुहाई

न जानती थी कत्ल ही बेटा है कर रहा
सोचो ज़रा था किसके हाथो कौन मर रहा

कुछ ही पलों मे माँ का कलेजा निकाल कर
ज़ालिम था चल पड़ा हथेलियो पे डाल कर

जल्दी मे चल रहा था गली मे फिसल गया
जब मुँह के बल गिरा तो मुँह से माँ निकल गया

जैसे ही लड़खड़ा के गिरा था वो सरफिरा
माँ का कलेजा उसके हाथो दूर जा गिरा

जिस पल वो फिर कलेजा उठाने को झुका था
हैरत हुई थी उसको वो पल भर को रुका था

माँ के कलेजे मे से इक आवाज़ थी आई
क्या तुमको प्यारे बेटे कही चोट है आई

उस माँ को था मर के भी फ़िक्र अपने लाल का
पागल न दे सका जवाब उस सवाल का

उसने ज़मीं से माँ का कलेजा उठा लिया
जल्दी से चलके कूच-ए-जाना मे आ लिया

बोला निगाहे उसकी निगाहो मे डालकर
लाया हूँ देख माँ का कलेजा निकाल कर

आशिक के हाथो कत्ल का सुनकर सिमट गई
देखा जो कलेजा तो डरके पीछे हट गई

बोली हसीना तुझको माँ से प्यार नहीं है
जालिम तेरा मुझे भी ऐतबार नही है



चल

भारत की पुण्य भूमि पर मस्तक झुका के चल
हिन्दी है तू तो फख्र से सीना फुला के चल

मिटटी मे शहीदो ने लहू जब मिला दिया
ज़र्रों को आफताब का दर्जा अता दिया
माथे पे तू उस गर्द का टीका लगा के चल

माना तुझे अमन से प्यार बेशुमार है
दुशमन मगर बगल मे खड़ा ले कटार है
उसको भी जवानी के तू जौहर दिखा के चल

हम वो है जो दुनियाँ से कभी डर नहीं सकते
करने पे जो आ जाए तो क्या कर नहीं सकते
एहसास ये ताकतवरो को भी दिला के चल

झुक जाने वाला सर कभी हिन्दी नहीं होगा
बुज़दिल जो कहाए कभी हिन्दी नहीं होगा
डके की चोट पर ये जहाँ को बता के चल

दुनियाँ मे अगरचे हमारा नाम बड़ा है
करने को बेशुमार मगर काम पड़ा है
दुनियाँ की तरक्की के सग कदम मिला के चल



चार दिन

कहते है चार दिन तलक ही रहती जवानी
कहने को उम्र कम है मगर इसकी कहानी

शायर ने ये कहा है जवानी नहीं है वो
दुनियाँ से जुदा रखती कहानी नहीं है जो
पीरी मे सुनाया करे जो अपनी ज़बानी
कहने को

बाते वो लड़कपन की जवानी की दास्ताँ
बेफिक्र ज़िदगी का वो मस्ती भरा समा
रहती है याद सबको जवानी की कहानी
कहने को

गिन गिन के रात कटती है तारो की कतारे
लगती है पुरअसरार ख़िज़ाए भी बहारे
सौ सौ गुनाह माफ हो जिसमे वो जवानी
कहने को

जैसे हर एक फूल का मुरझाना अटल है
वैसे हर इक इन्सान का मर जाना अटल है
होती है अमर देश के काम आके जवानी
कहने को



मरीचिका

मरीचिका है युद्ध आदमी को छल देगा
अपने पैरो तले इन्सानियत कुचल देगा

उन अबलाओ से पूछो जिनकी चूड़ियाँ टूटी
और उन माओ से तक्दीर थी जिनकी फूटी
युद्ध बादल का एक चमकदार टुकड़ा है
मौत बरसा के चहूँ ओर कही चल देगा

बात करने से हर मसले का हल निकलता है
लड़ाई झगड़े से तो मामला बिगड़ता है
युद्ध ख़ुद आजकल का सबसे बड़ा मसला है
कौन कहता है युद्ध मुश्किलो का हल देगा

अमन की बात करो और अमन से बात करो
चमन मे रहते हो पहले चमन से बात करो
हमको मिलजुल के हल करने है मसायल अपने
पड़ौसी और भी उलझा के हमे चल देगा।



मिट्टी

सावन की पहली बदली
और महक सुहानी मिटटी की
मुद्दत मे फिर लौट के आई
याद पुरानी मिटटी की

हम जीवन से रूठ चुके थे
लेकिन तेरे आने से
सोते सोते जाग उठी है
आज जवानी मिटटी की

मिटटी का पुतला है इन्सॉ
मिट्टी मे मिल जाता है
फिर भी खत्म नहीं हो पाती
कभी कहानी मिटटी की।



नई ब्याहता

इक सुन्दर सी
नई ब्याहता,
हाथो मे पूजा की थाली,
गीली पल्के सूखे होंठ,
मदिर की ड्योढी पे आकर
भरे गले से इतना बोली।

क्या श्रद्धा होती है भगवन
और तपस्या क्या होती है,
न जानू, मै कुछ न जानू
मै तो बस इतना ही जानू
तुम जैसा है साजन मेरा।

जान तली पे रखकर अपनी
दुश्मन से लोहा मनवाने,
वो सरहद की ओर गया है
उसकी भगवन रक्षा करना।



ग़ज़लें



आस्माँ छूने चले थे पर जलाकर आ गए
हम भी अपने हौसलो को आज़मा कर आ गए

ज़िदगी को खेल कह कर खेलते जाते है वो
और हम सजीदगी में मुँह की खाकर आ गए

हम ज़मीं वो आस्माँ है मेल तो मुमकिन नहीं
दिल मे उनकी याद का तूफ़ाँ छुपा कर आ गए

बारहा फ़ुर्कत मे हमने खुद को कोसा है बहुत
होके ज़र्रा कहकशाँ से दिल लगा कर आ गए

किस कद्र हमवार थे वो ज़िदगी के रास्ते
अपने हाथो उनको हम सहरा बनाकर आ गए

हर कोई देखा जहाँ मे माँगता उम्रे दराज़
हम तो जीने की हर इक ख्वाहिश मिटाकर आ गए।





ज़िदगी मे हर कदम जिन पर सितम होते रहे
आँसुओ के साथ वो ज़ख्म-ए-जिगर धोते रहे

मैकदे का रास्ता तू राह के पत्थर से पूछ
रात भर जिससे लिपट कर बादाकश रोते रहे

ज़िदगी कल रात अपने घर भी दस्तक दे गई
और हम मखमूर सब कुछ भूल कर सोते रहे

किसलिए उम्मीद फल की कर रहे है आज वो
जो बबूलो को हयात-ए-मुख़्तसर बोते रहे

किस तरह साहिल तलक आएगी उनकी कश्तियाँ
उम्र भर जो कश्तियाँ औरो की डुबोते रहे।





एक ताजिर फिर अमन का जाम लेकर आ गया
सुरमई सुबह सुहानी शाम लेकर आ गया

अब कोई मुफलिस कोई बेकार न रह पाएगा
हर किसी के वास्ते वो काम लेकर आ गया

अब किसी को भी किसी से जान का ख़तरा नहीं
सबकी हिफाज़त का इन्तज़ाम लेकर आ गया

ज़ात और मज़हब की हर दीवार उसने तोड़ दी
बस लबों पर एक रब का नाम लेकर आ गया

अब कोई ग़द्दार अपना सर उठा न पाएगा
सर कुचलने का खुला पैग़ाम लेकर आ गया

ख़ौफ लेकर आया है हर एक ज़ालिम के लिए
नेकनीयत के लिए ईनाम लेकर आ गया।





जो ज़मीं से ख़ासा करीब हो उस आस्माँ की तलाश है
जो न मंज़िलो तक लुट सके उस कारवाँ की तलाश है

ये कत्ल-ओ-ग़ारत ख़ून खराबा न जिसमे हो सके
जहाँ प्यार की गंगा बहे मुझे उस जहाँ की तलाश है

जहाँ ज़ात और मज़हब का कोई पूछने वाला न हो
जहाँ सर पटकना हो मना उस आस्ताँ की तलाश है

जो हिन्द का लौटा सके खोया हुआ जाहो जलाल
जो मुहाफ़िज़े दो जहान हो उस पास्बाँ की तलाश है

जो नदीम हो, जो रफीक हो, जो हबीब हो एहबाब हो
जिसे दिल की बाते कह सके उस राज़दाँ की तलाश है





जिगर जल रहा है बदन जल रहा है
गुलो को बचालो चमन जल रहा है

अब भी जहाँ मे है सचाई ज़िन्दा
माना के उल्टा चलन चल रहा है

हर इक नौजवाँ से यही इल्तजा है
वतन को सभालो वतन जल रहा है

खलूस-ओ-मुहब्बत का निकला जनाज़ा
ज़माने मे हर-सू अमन जल रहा है

मुर्दे की कीमत तो कुछ भी नही है
मगर कितना महगा कफन जल रहा है





फिर तेरी याद नए गीत सुनाने आई
सिसकते साज़ मेरे लब पे सजाने आई।

भुला के तुमको बड़ा चैन मिला था दिल को
तुम्हारी याद मुझे फिर से रूलाने आई।

तुम्हारी याद का आना है मौत से बड़कर
जला के दिल को मेरे राख बनाने आई।

कोई ग़मो से कहो मुझसे लिपट कर रोए
ख़ुशी भी दर पे मेरे आँसू बहाने आई।

पड़ी है लाश मेरी रोने वाला कोई नही
मेरी कज़ा ही मेरा सोग मनाने आई।





हँसी लब पर सजाए फिर रहे हो
कौन सा ग़म उठाए फिर रहे हो

तुम तो ख़ुद्दार बने फिरते थे
आज क्यो सर झुकाए फिर रहे हो

सच यही है कि सच कहीं भी नहीं
फिर भी दिल को जलाए फिर रहे हो

तुमको ग़ैरत की पड़ी है अब तक
जबकि सबके सताए फिर रहे हो

सच की होती है जीत दुनियाँ मे
आस अब भी लगाए फिर रहे हो

ऐसा लगता है अपनी साँसों मे
कोई तूफ़ाँ छुपाए फिर रहे हो

जबकि चारों तरफ अधेरा है
मन का 'दीपक' जलाए फिर रहे हो





हमको भुलाने वाले ख़ुद को भूल जाएगे
हम बेख़ुदी मे फिर भी उन्हे याद आएगे।

आसॉ नहीं है यूँ हमे दिल से निकालना
ऑसू निकल आएगे अगर आजमाएगे।

तुमको यकीं नही मेरी मुरव्वतो पे खैर
हम वो नहीं जो रह गुज़र मे छोड़ जाएगे।

नफरत है जिन्हे सख्त मेरे शेरो सुखन से
जब हम न रहेंगे तो उन्हे गुनगुनाएगे।

हम ज़िदगी मे सब से मुहब्बत किए रहे
हमको यकीं नहीं था सभी छोड़ जाएगे।

बरसात के बादल है इन्हे जाने दीजिए
मौसम जो पलट आया ये भी लौट आएग

कर कर के हमे याद फिर न सर को पटकना
हम वक्त की मानिन्द नहीं लौट पाएगे।

मेरे मजार पे बहार आए के न आए
हरसू मेरे अशआर तो खुशबू लुटाएगे।

देखोगे आइना तो मेरा अक्स दिखेगा
दुनियॉ से चले जाएगे दिल से न जाएगे।

❑



लाया दिल से फूट रहा है,
जज्बो का पुल टूट रहा है।

सच की जीत हुआ करती है,
जिसने कहा ये झूठ कहा है।

शहरे तमन्ना मिटने को है,
हर कोई इसे लूट रहा है।

कैसे बात करे महलो की,
छप्पर जिसका टूट रहा है।

जिसके बिना जीना मुश्किल है,
साथ उसी का छूट रहा है।





चारसू कैसी ये हाहाकार है
ये हमारी आपकी सरकार है

है जरूरी आज भी कुर्बानियाँ
सरफ़रोशी आज भी दरकार है

कौन है जो आजकल महफूज़ है
सबके सर पर डोलती तलवार है

है क्यामत सामने सुन लीजिए
ये बताती वक्त की रफ़्तार है

असमते महफूज है न इज्ज़ते
चीखती घर-घर की हर दीवार है

नफ़रतो के नाग है चारो तरफ
उनसे बचना किस कद्र दुश्वार है

कश्तियाँ साहिल पे कैसे आएगी
आँधियो के हाथ मे पतवार है

माँ की छाती से लहू पीकर उसे
कर दिया नगा सरे बाजार है।

देश का सौदा करे और शान से
ये कहे कि वो दयानतदार है

मां भी लानत भेजती है कोख पर
उसने क्यो जन्मा कोई गद्दार है

हिन्द की ऐ मादरे वतन तेरी
बेज़मीर औलाद को दिक्कार है

था पढा हमने कि मज़हब दोस्तो
सबको सिखलाता खलूसो प्यार है

है तिजारत कर रहा जो मौत की
आज वो मजहब नही व्योपार है

चाहिए हर घर मे ऐसा सूरमा
देश पर मिटने को जो तैयार है

फख्र है उस माँ को अपने दूध पर
जिसका बेटा देश की तलवार है

मुल्क से जिसको मुहब्बत हो गई
वो कोई इन्साँ नहीं अवतार है





क्या भुला कर बैठे हो दीदे का पानी दोस्तो
इक दफा मिलती है सबको जिंदगानी दोस्तो

वर्क़ भी रौशन है रौशन माहताब-ओ-आफताब
ता-फलक नूर-ए-इलाही का न सानी दोस्तो

सरवराही रहनुमाई कुछ नहीं जाहो जलाल
चाहे जो बन जाए पर इन्साँ है फानी दोस्तो

ये सबाते अक्ल भी काम आएगी कब तक
दुनियाँ ने कब सही है हकीकत बयानी दोस्तो

गर घराने जिंदगी नेकी से दरख़्शाँ न हो
क्या रहेगी जग मे इन्साँ की निशानी दोस्तो

अपनी सदाक़त परस्ती छोड़ मत देना कहीं
हुक्म तो सुनना मगर बस आस्मानी दोस्तो

सब्र की बाती को इबादत का तेल चाहिए
वर्ना मिट जाएगी 'दीपक' की कहानी दोस्तो





इक आदमी मे फिर इन्सान नज़र आया है
ऐसा लगता है के भगवान नज़र आया है

तमाम उम्र गुज़ारी है बीच मुर्दों के
आज फिर जीने का सामान नज़र आया है

आज देखी है झलक भगतसिह की फिर मैने
फिर एक खान अब्दुल खान नज़र आया है

जागती आँखो ने इक ख़्वाब दिखाया जिसमे
अमन बर्साता असमान नज़र आया है

आज फिर हिन्द के इक नौजवाँ की आँखो मे
वतन परस्ती का फरमान नज़र आया है





मैं हू रूसवा है जिदगी रूसवा
मेरी ऑखो की है नमी रूसवा

ऐसा लगता है अलम-ए- हिजरा
करके छोड़ेगा हर खुशी रूसवा

अब बुरा कौन और भला क्या है
जबकि हर-सू है आदमी रूसवा

अब मुहब्बत किसी से क्या होगी
इश्क रूसवा है आशिकी रूसवा

है अधेरो का राज दुनियॉ मे
'दीप' रूसवा है रौशनी रूसवा





या ख़ुदा वो सुन न पाए अब मेरे अशआर तक
अब मेरा नाला न पहुचे कूच-ए-दिलदार तक

क्या सबब है क्यो ये दुनियाँ बद से बदतर हो गई
क्यो तबीबो से डरा करते है ख़ुद बीमार तक

दिल भी था एहसास भी था बोल भी सकते थे हम
चाह के भी कर न पाए उनसे हम इज़हार तक

ज़िदगानी का सफ़ीना डालकर तूफ़ान मे
साथ अपने ले गया है क्यो कोई पतवार तक

मेरे कातिल ने तलब की मेरे ही घर मे पनाह
चुप रहा लब सिल गए मुमकिन न था इन्कार तक





एहसानो का मारा हूँ मै
दुनियाँ का दुत्कारा हूँ मै

चलता हूँ रुख देख हवा का
तभी तो सबका प्यारा हूँ मै

बन के फूल मिला करता हूँ
वैसे तो अगारा हूँ मै

है बुनियाद जमी मे मेरी
पर ऊचा चौबारा हूँ मै

बरसूँ तो जल थल हो जाए
बादल इक आवारा हूँ मै

जर्रो का हमसाया हूँ पर
एक दरख्शाँ तारा हूँ मै





हम को लूटा जवाँ बहारो ने
दिल को बहलाया आज खारो ने

जला के राख किया फूलो ने
राहत-ए-दिल तो दी शरारो ने

बच के तूफान से निकल आए
हमको लूटा है इन किनारो ने

दुश्मनो ने नहीं भुलाया मगर
हमको ठुकरा दिया है यारो ने

जलजलो का जो रुख बदलते थे
उनको फूँका है आबशारो ने





जब भी देखा तुझे हैरान ही देखा मैने,
जिदगी तुझको परेशान ही देखा मैने

दिल मे तो हसरते आबे हयात थी लेकिन
हर तरफ मौत का सामान ही देखा मैने

लोग कहते है कि कुछ लोग भले होते है
जिसको देखा यहा बदनाम हीं देखा मैने

कैसे हैवानो की पहचान होगी दुनियॉ मे
सबसे बदतर यहॉ इन्सान ही देखा मैने

बेवफाओ को मिला करती है दुनियॉ मे वफा
बावफा लोगो को नाकाम ही देखा मैने





दिलजले दिल को जलाने की बात करते हैं,
गमज़दा ग़म को छुपाने की बात करते है।

छोड़ कर जिसको उनकी जान पे बन आएगी,
उसी को छोड़ कर जाने की बात करते हैं।

उम्र भर जो न मैकदे के पास से गुज़रे,
आज वो पीने पिलाने की बात करते है।

तेज़ रफ़्तार से बदलती हुई दुनियाँ मे,
दिल को बेदिल भी लगाने की बात करते है।

अपनी तहरीर न समझो मेरे अशआर नदीम,
बा-ख़ुदा हम तो ज़माने की बात करते है।





देख ली लाखो दुनियाँ की रुसवाईया,
अब चलेगी तरन्नुम की पुरबाईयाँ।

नाच उठ्ठेगा गम रो पड़ेगी खुशी,
टुकड़े-टुकड़े हो जाएगी शहनाईयाँ।

वसल चिल्लाएगा हँस पड़ेगी जफा,
हर कही मुस्कुराएगी तन्हाईयाँ।

चारसू दिल शिकन होगा माहौल भी,
इन्सा रह जाएगे बनके परछाईयाँ।

उजले रुख़सार पे किसलिए नाज है
और क्यो ले रहे हो यूँ अगड़ाईयाँ।

नूर मिट जाएगा होगा हर-सू धुआँ
फिर दिखेगी न आँखो की गहराईयाँ।





आतिशे दर्द को सीने मे छुपाया मैने
खुश्क ऑखे ही रहीं दिल तो रुलाया मैने

जब भी जीवन मे रकीबो से नज़र टकराई
मुस्कुराहट को मगर लब पे सजाया मैने

वो जो कॉटो मे मुझे छोड़ कर गए तन्हा
जब वो लौटे उन्हे पलको पे बिठाया मैने

क्या कहूँ मुझको कभी खुद पे हॅसी आती है
दर्द क्यो पाल लिया दिल मे पराया मेने

कितना नादा हूँ जलाए मेरे अरमाँ जिसने
उसकी यादो मे मगर दिल को जलाया मैने





सरहद पे जा बहा वो किस इन्साँ का लहू
हिन्दू का लहू था कि मुसलमाँ का लहू

जिसन चमन का गोशा गोशा सुर्ख कर दि
गुल का वो लहू था कि गुलिस्ताँ का लहू

सीने से बहा धरती पे जै हिन्द लिख ग
बेख़ौफ मर्दाना कहो किस माँ का लहू

सरहद पे जो पैरो तले रौन्दा था जा
धरती का लहू था कि आस्माँ का लहू

बहते लहू को देखकर पहचान न
अपनो का लहू था कि आमिदाँ का लहू

वादी का लहू था न बियाबाँ का लहू
सरहद पे जो बहा फकत इन्साँ का लहू





कारवाँ लुटते रहे और रास्ता चलता रहा
आँधियो के दरम्याँ नन्हा दिया जलता रहा

ज़िदगी भी ज़िदगी को ज़िदगी न दे सकी
मौत का नश्तर हमेशा जिस्म पे चलता रहा

जिसने कुचले नफरतो के नाग दुनियाँ मे सदा
इक सपोला आस्तीं मे उसकी ही पलता रहा

मोम का दिल जिसने पाया पत्थरो के शहर मे
उसका सद्यापन ज़माने को मगर खलता रह

तैरते थे कितने अनाड़ी नज़र के सामने
यो किनारे बैठकर बस हाथ ही मलता रहा





रौशनी जब रौशनी से डर चुकी होगी
तब ये दुनियाँ पाप लाखो कर चुकी होगी

राम जब तक लौट के आएगे दुनियाँ मे
तब तलक सौ बार सीता हर चुकी होगी

याद जब आएगी भाई को बहन उसकी
ख़ुदकुशी असमत लुटा के कर चुकी होगी

करके नगा उसको चौराहे पे बिठा दो
देखना वो माँ शर्म से मर चुकी होगी

होश तुमको आएगी पहले वतन जब तक
जीवन की माला टूट के बिखर चुकी होगी





मुद्दत हुई न तुमने कहा हमसे प्यार है
लेकिन हमे अभी भी तेरा इन्तज़ार है

तेरी जफा का ग़म तो उठाए है फिर रहे
उठता नहीं है जो वो ग़मे रोज़गार है

यूँ तो गिरेबा चाक सिया बारहा मगर
तीरे नज़र जिगर के मेरे आरपार है

जन्नत भी वार दूँ जो कही मुस्कुराके तुम
धीरे से ये कहो के तुम्हे हमसे प्यार है

तुमको खबर नही है पर अपना वो हाल है
इक लफ्ज़े मुहब्बत के लिए जाँ निसार है





रकीब जान के जिस शख़्स ने मारा हमको
हाय इस जान से भी बढ के था प्यारा हमको

वार पीछे से छुपके आज जिसने फैंका है
कल तलक जग मे था उसका ही सहारा हमको

किसका अपना कहे और किसको गैर हम समझे
कोई लगता नही है जग मे हमारा हमको

ऐसे मौके पे डुबोया है भवर म उसने
नज़र जब आ रहा था खुश्क किनारा हमको

सारी दुनियाँ तो ख़ैर हमसे ख़फा है लेकिन
ज़िदगी तुमने भी मुड़कर न पुकारा हमको





हम पर जितने वार हुए है
सारे पीठ से पार हुए है

हम यारो के हाथो यारो
रुसवा सरे बाज़ार हुए है

वक्त ने कैसी चाल चली है
दुशमन सारे यार हुए है

मंज़िल तक पहुँचा देते है
रस्ते जो दुश्वार हुए है

कागज़ और कलम ही जग मे
दानिश की तलवार हुए है।





कुछ न कहना अक्ल के अन्धो से
दुनियाँ चलती है ऐसे बन्दो से

वो न मेहनत को समझ पाएगे
पेट पलता है जिनका चन्दो से

देश को लूट कर खाने वाले
कब तलक बच सकेगे फन्दो से

ये लुटेरे वतन के दुशमन है
कम नही इन्तहा पसन्दो से

लाल फीते ये अनगिने तमगे
वक्त नोचेगा इनके कन्धो से





हर राज़दाँ गूँगा हुआ हर आशना बहरा यहाँ
हर जुस्तजू पर कैद है हर ख्वाब पर पहरा यहाँ

सच का जनाज़ा ले गई दुनियाँ की बेमुरव्वती
ज़ुल्मो सितम का ये धुआँ होता गया गहरा यहाँ

गंगो जमन क्यो झूठ की बहे जा रही है चारसू
सच की नदी का एक भी कतरा नहीं ठहरा यहाँ

मिलती दयानतदार को दो वक्त की रोटी नहीं
झंडा मगर खुदगर्ज़ियो का खूब है फहरा यहाँ

भारत की आन जान से बढ़कर समझ एहले वतन
लुटने न पाए ये चमन हो जाए न सहरा यहाँ

हरसू खुशी गाती रहे जले शादमानी के दिए
मेरा वतन खुशहाल हो हँसता हो हर चेहरा यहाँ





मेरी तमाम हसरते मिटाने वाले ने
किया है याद मुझे फिर भुलाने वाले ने

अपने इख़्लाक की बारिष मे भिगो डाला है
मेरा जलता हुआ सीना जलाने वाले ने

मुझको रजो सितम से दूर कर दिया आख़िर
हाथ मे हाथ मेरा ले सताने वाले ने

ख़ुशी मिलती है मुझे दूसरो के गम पीकर
अजब ये जाम पिलाया पिलाने वाले ने

वतन की ख़ाक पेशानी पे लगाकर मेरी
बदल दिया मेरा जीवन ज़माने वाले ने

दिल के हाथो से वो मजबूर हो गया होगा
दिल भी क्या चीज़ बनाई बनाने वाले ने





मंज़िलो के रास्ते पर मैक़दा आता नहीं
मैक़दे से सू-ए-मंज़िल कोई जा पाता नही

दूसरो के काम बादाकश भला क्या आएगे
बेख़ुदी मे आदमी ख़ुद ही सभल पाता नही

हमने माना ज़िंदगी इक तेज़ रौ दरिया सी है
कौन कहता है के हमको तैरना आता नहीं

जो वतन के इश्क़ की आबे हयात पी गया
ता-क़यामत ये जहाँ उसको भुला पाता नहीं

गर कोई नन्हा दिया तारीकियो मे जल पड़े
कौन कहता है अंधेरा उससे घबराता नहीं





आज नज़रो को कोई ख़ूब नज़ारा होगा
वो नज़ारा हमे इस जान से प्यारा होगा

हम तो बट ही चुके हैं ख़ैर कई हिस्सो मे
वो मगर सारा का सारा ही हमारा होगा

ज़िदगी नामे वतन कर ही चुके है लेकिन
जान दे देगे अगर उसका इशारा होगा

ला-सबब लब पे तबस्सुम जो चला आया है
ऐसा लगता है मुझे उसने पुकारा होगा

नदीम हमको तो जीना है दूसरो के लिए
अपने जीने का तो बस वो ही सहारा होगा





वैसे तो ये दुनियाँ फानी है
लेकिन सच से अन्जानी है

एहसास है क्या जज्बात है क्या
क्या सच है क्या बेमानी है

हर ठोकर जाने क्यो हमको
लगती जानी पहचानी है

जीवन जीना दुशवार बहुत
मर जाने मे आसानी है

करना है तो मुश्किल काम करो
आसानी तो आसानी है।





कितने सस्ते मे बिक गया ज़मीर लोगो का
अब तो पैसा ही बन गया है पीर लोगो का

जग मे होती रही दानिशवरो की रुसवाई
खोटा पैसा भी चल गया अमीर लोगो का

गए वो लोग जो करते थे वार सीने पे
अब तो चलता है पीठ पर ही तीर लोगो का

दयानतदार अब नाकाम फिरा करते है
जग मे होता है भला बेज़मीर लोगो का

अब तो रूहे भी सरे आम बिका करती है
कल तलक जग मे था बिकता शरीर लोगो का



चन्द अशआर-ओ-रुबायात उन गज़लो से जिन्हे चाह कर भी 'लावा' मे शामिल नहीं किया जा सका।

जमाना तुझ पे सौ इल्ज़ाम दे बेज़ार मत होना
लोग फलदार पेड़ो पर ही पत्थर मारा करते हैं

•

लहू लुहान चेहरे भी कई बेदाग होते हैं
बर्फ के सर्द टीले भी सुलगती आग होते है

•

बड़ी मुश्किल मे फॅसा आज सफीना दिल का
हर एक मौज पे लिखा है नाम साहिल का

•

ज़िदगी जब भी अधेरो से परेशॉ होगी
रूह इन्सान की कुछ और दरख़्शॉ होगी

•

इश्क की इन्तेहा से वाकिफ हूँ
हुस्न की हर अदा से वाकिफ हूँ
जो बगल मे लिए हुए है छुरी
मै उन एहले ख़ुदा से वाकिफ हूँ

•

फासले दुनियॉ मे बढते जा रहे है
आदमी ही आदमी को खा रहे है
दिल के रिश्तो की भला क्या बात हो
ख़ून के रिश्ते बदलते जा रहे है

•

मौत इक रोज़ सब को आनी है
हर बशर इस जहॉ मे फानी है
वतन के काम जो नही आती
वो जवानी भी क्या जवानी है

मर मर के ज़िंदगी भर जीता रहा हूँ मैं
अपने ही आँसुओ को पीता रहा हूँ मै
दुनियाँ ने सितम ढाए छलनी किया जिगर को
ज़ख्मो को अपने हाथो सीता रहा हूँ मै

*

दो जहाँ को छोड़ कर तू इस ज़मीं की बात कर
बादलो को भूल आँखो की नमी की बात कर
आदमी इन्सान क्यों लगता नहीं है आज कल
कौन सी आखिर कमी है उस कमी की बात कर

*

मंज़र भी तुम्ही हो पसेमंज़र भी तुम्ही हो
फूलो का हार तुम हो तो खंजर भी तुम्ही हो
कहिए किसे तुमने ही तो लूटा है कारवाँ
रहज़न भी तुम्ही हो मेरे रहबर भी तुम्ही हो

*

ज़िंदगी से दूर रहकर जी रहा हूँ ज़िंदगी
तेरे हाथो जामे ज़हर पी रहा हूँ ज़िंदगी
लेके अपना चाक गिरेबाँ चला जाऊँ कहाँ
अपने हाथों ज़ख्मे जिगर सी रहा हूँ ज़िंदगी

*

रौशनी आग से नही मिलती
ये उजाला तो दीप देते है
हम वो बाते भुला नही पाते
जिनको बचपन मे सीख लेते है

*

कर्ज़ मिट्टी का चुकाना होगा
कुछ अलग करके दिखाना होगा
गर न जीने से बात बन पाई
हिन्द पे मरके दिखाना होगा

रक्स फर्मा थी चॉदनी जिन पर
अब उन चेहरो पे धूल मिलती है
हर सू साए जफा के दिखते है
धूप उलफत की कम निकलती है

*

वो दरख्शाँ चॉद से काली घटा जब हो गए
इश्क रुसवा हो गया अरमान सारे सो गए
जीते जी, जी भर न पाया जिनका ज़र ज़मीन से
मरके ये आलम है के दो गज़ ज़मीं पे सो गए।

*

कुत्ते की मौत क्यो शहीदो की क्यो नही
लड़कर वतन से क्यो मरे वतन पे क्यो नही

*

शामे वसल का दिल से कोई वास्ता नही
मंज़िल तो सामने है मगर रास्ता नही
जब अपने होश थे हमे तेरा पता न था
तेरी खबर मिली है तो अपना पता नही

*

तन्हा गुज़र सके इतनी आसान नही है
कहता है कौन ज़िदगी तूफान नही है
किस्मत से जी रहा है आज हर कोई वर्ना
किस हादसे मे मौत का सामान नही है

*

सच के ऑचल तले इक झूठ को पलते देखा
जान से प्यारे दोस्तो को बदलते देखा
नदीम हमने तो इस रहगुज़र पे दुनियॉ की
ज्यादा इन्सान से मुर्दो को है चलते देखा

*

जब कोई ज़र्रा उठा है आफतावो की तरह
टूट कर बिखरा हमेशा पस्त ख्वावो की तरह

फितरत का असर है मेरे जज्बात का नही
करता वतन का इश्क है इस खूँ मे रवानी
डर दिल को ज़माने की किसी बात का नही

•

हिम्मत है तो ऊँगली उठा कर देख लो
होगा कलम तुम सर उठा कर देखलो
हिन्दोस्ताँ से दोस्ती या दुशमनी
होगी मिसाली आज़मा कर देखलो

•

महगाई तो अजगर है मगर पेट की खातिर
इससे हर इक इन्साँ को लिपटना ही पड़ेगा
चादर है बहुत तग बढ रहे है मगर पाँव
करना है गुज़ारा तो सिमटना ही पड़ेगा

•

या तो किस्मत हमे जुदा न करे
वर्ना फिर से मिले ख़ुदा न करे

•

मेरे मौला मुझे पहली सी ज़िदगी दे दे
वो फूर्कते वो फुर्सते वो सादगी दे दे।
मेरे जज्बात पे हालात का पहरा क्यो है
मुझको बेख़ौफियत से फण की बदगी दे दे।

